भारत सरकार

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

लोकसभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 788

दिनांक 07 फरवरी, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

ट्राइकोफाइटन इंडोटिनी की व्यापकता

788. श्री एंटो एंटनीः

क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) सरकार द्वारा क्षेत्र-विशिष्ट रूप से फंगस का नाम ट्राइकोफाइटन इंडोटिनी रखने के बारे में उठाई गई चिंताओं को दूर करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जाने का प्रस्ताव है ;

(ख) क्या सरकार ने फंगस के लिए इस्तेमाल किये गए नामकरण सम्मेलन की समीक्षा या चुनौती देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संपर्क किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) देश के भीतर ट्राइकोफाइटन इंडोटिनी के प्रसार से निपटने के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं ;

(घ) क्या सरकार के पास देश के विभिन्न राज्यों में ट्राइकोफाइटन इंडोटिनी संक्रमण के प्रसार के बारे में आंकड़ा हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या ट्राइकोफाइटन इंडोटिनी की उत्पत्ति और उपचार विकल्पों को समझने के लिए किसी शोध पहल को वित्तपोषित किया जा रहा है/वित्त पोषित किए जाने का प्रस्ताव है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) और (ख): फंगस का ट्राइकोफाइटन इंडोटिनी यह नामकरण विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के रोगों और रोग पैदा करने वाले जीवों के क्षेत्र-मुक्त नामकरण के सिद्धांतों के विरुद्ध है । सरकार ने तदनुसार डब्ल्यूएचओ को सूचित किया है।

(ग) सरकार ने फंगस के फैलाव से निपटने के लिए बहुआयामी उपाय किए हैं, जैसे कि बेहतर माइकोलॉजिकल डायग्नोसिस, एंटी- फंगल और कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स के तर्कसंगत उपयोग के बारे में जागरूकता, तथा एंटी-माइक्रोबियल प्रतिरोध और एंटी-फंगल थेरेपी पर अनुसंधान।

(घ) और (ङ) : भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने सूचित किया है कि त्वचा विशेषज्ञों और कवक विशेषज्ञों द्वारा किए गए कई अलग-अलग अध्ययनों से चयनित आबादी में व्यापकता के बारे में जानकारी मिलती है, जिन्हे पूरे देश में सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है क्योंकि इन अध्ययनों में नमूना आकार बहुत छोटा है।

आईसीएमआर ने इस संक्रमण के विभिन्न मुद्दों के अध्ययन के लिए कई परियोजनाए कार्यान्वयित की है , जिनमें संक्रमण के फैलने के पीछे के कारणों का पता लगाना, देश भर में प्रतिरोध की व्यापकता को समझना, इस कवक के संचरण की गतिशीलता को समझना और क्रोनिक/पुनरावर्ती या रिलैप्स डर्मेटोफाइटिस में फंगल विषाणु, फार्माकोकाइनेटिक्स और टेरबिनाफाइन के फार्माकोडायनामिक्स की भूमिका का मूल्यांकन करना शामिल है।

इसके अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने सूचित किया है कि उसने एक शोध परियोजना को वित्तपोषित किया है जिसका शीर्ष है - *क्लोनल ट्राइकोफाइटन मेंटाग्रोफाइट्स/ इंटरडिजिटलिस* एसपीपी कॉम्प्लेक्स में एज़ोल और टेरबिनाफाइन प्रतिरोध की जीनोमिक अंतर्दृष्टि।

*****